IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

रीवा जिले के महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता दशा और दिशा

डॉ. अखिलेश कुमार द्विवेदी

एम. ए., एम. फिल, पी. एच. डी. (राजनीति विज्ञान)

शोध सारांशः महिलाओं को अपने किसी भी प्रकार के अधिकारों के लिए अक्सर संघर्ष करते हुए क्यों देखा जाता है ? समाज में समानता का अधिकार जैसे जीवनसाथी चुनने, नौकरी करने या न करने, विवाह करने या अविवाहित रहने, यहाँ तक कि अपने जीवन को अपने इच्छानुसार जीने, सार्वजनिक जीवन में पुरुषों के हस्तक्षेप के बिना कार्य करने राजनैतिकरूप से सहभागिता निभाने, मतदान करने आदि अधिकारों को क्या महिलाओं ने अपने व्यक्तित्व का हिस्सा बना पाई है? यदि नहीं तो फिर कैसा महिला सबलीकरण? भारतीय समाज में पुरूष सत्ता के मूल्यों के आधार पर महिलाओं का सामाजीकरण कुछ इस प्रकार से किया जा रहा है कि महिला के अस्तित्व को पुरूष से भिन्न करके देखा ही नहीं जाता है। महिलाओं के जीवन से जुड़ा प्रत्येक निर्णय पुरूष सत्ता ही तय करती चली आ रही हैं इस परम्परा पर पाबंदी नितान्त आवश्यक है और यह तभी संभव हो सकता है जब पूँजीवादी व्यवस्था व पितृसत्ता का पूर्णतया अन्त हो जाय। महिलाओं से अपनी इच्छानुसार वर्ताव कराने के लिए पुरूषों ने हमेशा से भय के मनोविज्ञान का प्रयोग किया है। जैसे परिवार की मर्यादा के नाम पर कभी उसे शारीरिक और बौद्धिक कमजोर होने का यकीन दिलाना, परिवार व पति की सेवा को उसका धर्म व मुक्ति का मार्ग बताना, घर–परिवार के इच्छा विपरीत किसी भी काम में सहभागिता न बनना लोक –लज्जा आदि का तर्क देकर महिलाओं को सदा ही अपने अधीन बनाएं रखना चाहता है। भारतीय समाज में इसी तरह की अनेकानेक किंवदंतियां एवं पूर्वाग्रह का इतिहास लंबा है। विडंबना यह है कि समाज के आधुनिक व शिक्षित वर्ग भी आज तक इन रूढ़ियों व पुरातन परंपराओं पर अंकुश लगाने में सफल नहीं हो पाया या फिर यह कहना गलत नहीं होगा कि इन कुरीतियों पर अंकुश लगाना ही नही चाहता है।

उल्लेखनीय है कि इतना सारा सामाजिक दंश झेलने के बाद महिलाएं स्वयं सास और माँ के रूप में अपने बहू व बेटी को पितृसत्तात्मक समाज के अधीन जीवन यापन करने का उपदेश देती सर्वदा देखी जाती है, उनका कहना है कि लड़कियाँ लड़कों के तुलना में बौद्धिक व मानसिक रूप से कम परिपक्व होने के कारण उन्हें नियन्त्रित व निर्देशित रहना जरूरी होता है। सेसी परिस्थिति में महिला सामाजीकरण व उनका सबलीकरण का कथन आज विरोधाभाषी नजर आता है। यदि महिलाओं का सामाजीकरण पुरूष सत्ता के अन्तर्गत हो रहा है, तो उनके वास्तविक सबलीकरण की बात बेमानी के अलावा कुछ नहीं है, अन्यथा लोकसभा में एक बहुप्रतिक्षित महिला आरक्षण विधेयक कब का ही पारित हो चुका होता, क्या महिलाओं के सबलीकरण से पुरुषों के लिए समाज के समक्ष विभिन्न चुनौतियां उत्पन्न हो जाएँगी जिसके भय से महिला आरक्षण विधेयक को पारित होने से रोंका जा रहा है ? यह एक ऐसा अनुत्तरित प्रश्न है जिस पर विमर्श करने से भी लोग

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

कतराते है, महिलाओं के संदर्भ में ऐसे अनेक प्रश्न है जिन पर विमर्श अथवा सार्वजनिक चर्चा करने की जरूरत सदियों से अनुभव की जाती रही है, परन्तु समाज, सरकार, बौद्धिक जगत, शिक्षित जगत आदि सभी अक्सर खामोश नजर आते है अथवा कुछ औपचारिकताओं तक ही सीमित रह जाते है।

अध्ययन से पता चलता है कि रीवा जिले में भी महिलाओं की स्थिति कमोवेश उपरोक्तानुसार ही है यहाँ पर भी महिलाओं की स्वतंत्रता उदारता और खुलेपन को घर–परिवार और समाज विरोधी आज भी समझा जाता है। महिलाओं को स्वतंत्र परिवेश से अलग रखा जाता है और जीवन में संतुष्टि निर्भरता से ही मितली है का विचार महिला के व्यक्तित्व का हिस्सा बना दिया जाता है। घर की चारदीवारी यानि की परिवार पति बच्चे व रसोई पर तो उसे चर्चा करने का हक है परन्तु इस दायरे के बाहर की दुनिया उसके चिंतन का विषय क्षेत्र नही हो सकता हैं।

आज के दौर में ज्ञान ही शक्ति है का तर्क यह संदेश देता है कि महिलाओं को भी ज्ञान के क्षेत्र में इतना गहराई से उतरना होगा कि वह न सिर्फ हर प्रकार के भय का सामना कर सके बल्कि इस सभ्य कहे जाने वाले आधुनिक समाज में एक शिष्ट जीवन व्यतीत कर सकें, समाज में कंधे–से–कंधा मिलाकर समानता के भाव से जीवन के समस्त पहलू जैसे सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक, आर्थिक एवं क्षेत्र में अग्रणी भूमिका का भी निर्वहन कर सकें। ज्ञान की इस शक्ति द्वारा ही महिला न केवल अपनें शोषण से मुक्ति पा सकती है बल्कि शाक्ति संबंधों में भी अपना स्थान सुनिश्चित कर सकती है।

मुख्य शब्दः समाज, राजनीतिक सहभागिता, सबलीकरण, पिछड़ापन, अग्रणी, भूमिका, प्रतिनिधित्व, समानता, आरक्षण, मतदान, व्यवहार, अधीनता, पितृसत्ता ।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

[1]. डॉ. धर्मवीर, राजनैतिक समाज शास्त्र राजस्थन हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2019, पृष्ठ सं. 164–165।

[2]. बघेल डॉ. डी. एस. एवं सिंह कर्चुली डॉ. टी.पी., राजनैतिक समाज शास्त्र, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली, 2013 पृष्ठ सं. 211।

[3]. जौहरी डॉ. जे. सी., राजनीतिक समाज शास्त्र, एस. बी. पी. डी. पब्लिकेशन आगरा, 2019 पृष्ठ सं. 32।

[4]. डॉ. (श्रीमती) सुशीला द्विवेदी भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति शोध सारांश स्मारिका, शोध संगोष्ठी, राजनीतिविज्ञान विभाग, शा. ठा. रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा, 2008 पृष्ठ सं. 28।

[5]. मृदुला सिंह, स्त्रियों के सबलीकरण की दिशा में इक्कीसवीं सदी की ओर, राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली –2001 पृष्ठ सं. 135–136।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

[6]. के.के.शर्मा, विंध्यक्षेत्र में महिलाओं की प्रस्थिति (समस्याएँ समाधान) स्मारिका, शोध पत्रों का सारांश, 2008 शा. ठा. रणमत महा विद्यालय रीवा, पृष्ठ सं. 21–22 ।